The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

संजीव के 'फाँस' उपन्यास में अभिव्यक्त किसान जीवन

कु0 रीता

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, ई-मेल: reetaresearcher12@gmail.com

डॉ0 बालेन्द्र सिंह यादव

शोध निर्देशक एवं सह आचार्य, हिन्दी विभाग, डॉ0 अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऊँचाहार-रायबरेली

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15861712

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 24-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

किसान जीवन, आत्महत्या, आन्दोलन, संजीव, कर्ज, अर्थव्यवस्था

ABSTRACT

भारत गाँवों का देश है, लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। इसीलिए कहा जाता है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की अर्थव्यवस्था में कृषि-क्षेत्र का अहम योगदान है। लेकिन, किसानों को जो सम्मान मिलना चाहिए था, वह मिल नहीं सकता है। हालांकि देश की सरकारों ने समय-समय पर किसानों के उत्थान हेतु कुछ-न-कुछ प्रयास किया है, परन्तु आज भी किसानों के जीवन में अपेक्षित सुधार नहीं हो सका है। सरकार द्वारा किसानों के उत्थान के लिए जो नीतियाँ बनायी जाती हैं, वह सिर्फ फाइलों तक सीमित होकर रह जाती हैं। देश की जनता का पेट भरने वाले किसान आज आत्महत्या करने को मजबूर हैं। प्राकृतिक आपदा, फसलों के उचित दाम ना मिलने, खाद-कीटनाशक दवाओं आदि के महंगे होने से किसानों को मजबूरन कर्ज लेना पड़ जाता है। इन समस्याओं के कारण किसान खेती छोड़कर शहर की ओर पलायन कर रहा है। अपने खेतों के मालिक किसान बड़े-बड़े नगरों के औद्योगिक कारखानों में मजदूर बन रहे हैं, जिसके लिए सत्ता तथा पूंजीवादी व्यवस्था की हिंसक उदारवादी आर्थिक नीतियाँ जिम्मेदार हैं। भारतीय किसानों की

समस्याओं को लेकर हिन्दी साहित्यकारों ने समय-समय पर अपनी लेखनी चलायी है यथा- गोदान (प्रेमचंद), नरक मसीहा (भगवानदास मोरवाल), बेदखल (कमलाकांत त्रिपाठी), अकाल में उत्सव (पंकज सुबीर) आदि। संवेदनशील कथाकार संजीव ने भी अपने 'फाँस' उपन्यास में किसानों की संघर्ष गाथा का जीवंत चित्रण किया है।क्षयह उपन्यास उदारवादी नीतियों का किसानों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का विश्लेषण करता है।

शोध-विस्तार

मानव सभ्यता के विकास में कृषि का सर्वाधिक योगदान रहा है। यह केवल मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की ही पूर्ति नहीं करता अपितु इसके माध्यम से रोजगार का भी सृजन होता है। यद्यपि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान लगभग 18 फीसदी है, किन्तु आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण (पी0एल0एफ0एस0) 2023-24 यह इंगित करता है कि कृषि प्राथमिक रोजगार क्षेत्र बना रहेगा। इसकी कार्यबल हिस्सेदारी 2017-18 में 44.1 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में 46.1 प्रतिशत हो गयी है।1 यह आंकड़े दर्शाते हैं कि कोरोना महामारी के दौरान जब औद्योगिक क्षेत्र लोगों को रोजगार देने में असफल रहा तब लोग जीविकोपार्जन हेतु कृषि की तरफ रुख किया। हालांकि, लॉकडाउन समाप्ति के बाद कुछ प्रतिशत लोग कृषि को छोड़कर पुनः उद्योगों में चले गये लेकिन, अधिकतर ने कृषि-क्षेत्र पर ही भरोसा जताया।

वस्तुतः कृषि अर्थव्यवस्था का प्राथमिक क्षेत्र है, जिससे अन्य क्षेत्र जुड़े हुए हैं। लेकिन, भारत का किसान आज भी हाशिये पर अवस्थित है। पिछले कुछ वर्षों में देश के विभिन्न राज्यों में किसान आत्महत्याओं के आंकड़ों में वृद्धि दर्ज की गयी हैं, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि कृषि क्षेत्र अभूतपूर्व संकट से गुजर रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन0सी0आर0बी0) के अनुसार वर्ष 2022 में कृषि से संलग्न लोगों की आत्महत्या से होने वाली मौतों में लगातार बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2024 के दिसम्बर माह में जारी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 में देश भर से 11290 किसानों ने आत्महत्या की, जो वर्ष 2021 से 3.7 प्रतिशत अधिक है।2 वर्ष 2022 के आँकड़े यह बताते हैं कि देश में हर घण्टे कम से कम एक किसान ने आत्महत्या की है। आत्महत्या करने वालों में सबसे अधिक महाराष्ट्र राज्य के किसान शामिल हैं। इन आत्महत्याओं के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन मुख्यतः प्राकृतिक आपदाएं, कर्ज, कृषि-लागत में वृद्धि और फसलों का उचित मूल्य न मिलना आदि हैं। संजीव ने किसान जीवन के

तमाम 'फाँस' को टटोलने की कोशिश की है। इस क्रम में वे 'फाँस' उपन्यास में धर्म, जाति, सत्ता आदि के वर्चस्व को भी चुनौती देने का कार्य किया है।

संजीव का उपन्यास 'फाँस' एक शोधपरक रचना है। यह महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त क्षेत्र विदर्भ के किसानों की करुण गाथा है, जो उदारवाद, भूमण्डलीकरण की आक्रामक और हिंसक आर्थिक नीतियों के शिकार हैं। संजीव अपनी रचनाओं में यथार्थ के मूल तक जाने के लिए यात्राएँ भी करते हैं। 'फाँस' उपन्यास लिखते समय भी उन्होंने खूब यात्राएँ की। इस उपन्यास के समय यात्रा के बारे में आउटलुक पत्रिका को दिए गये एक साक्षात्कार में वे कहते हैं, "मैंने सामने देखा, किसान झूल रहा है, उनके घरों में भी गया, उदास चेहरा।"3 इस उपन्यास का सर्जन संजीव ने महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा में अतिथि लेखक (2011-12) के कार्यकाल के समय किया। संजीव ने उपन्यास के आभार वक्तव्य में लिखा है, "इस उपन्यास को आधार देने का श्रेय महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा को जाता है, जहाँ (2011-12) के एक वर्ष के दौरान अतिथि लेखक के रूप में मैंने इसकी शुरुआत की, जहां से विदर्भ के विभिन्न जिलों की भूमि और भूमिपुत्रों की दशा-दिशा और दुर्दशा देखने और समझने का मुझे अवसर मिला।"4

यह उपन्यास किसानों की त्रासदी को चित्रित करता है। 'कर्ज' इस उपन्यास की मूल समस्या है, जो कृषक जीवन की त्रासदी है। जिस भी व्यक्ति ने कर्ज ले लिया फिर उसके गले में वह फाँस बनकर अटक जाती है। उपन्यास की स्त्री पात्र शकुन कहती हैं, "इस देश का किसान कर्ज में जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है, कर्ज में ही मर जाता है।"5 फाँस उपन्यास में संजीव एक साथ कई किसान-चरित्रों की गाथा लिखते हैं जिसमें एक तरफ शिबू, उसकी पत्नी शकुन है तथा उसकी दो बेटियाँ सरस्वती एवं कलावती हैं, तो दूसरी तरफ नागौर के किसान सुनील का परिवार है। साथ ही मोहन बाघमारे और उसकी पत्नी की दर्दनाक कहानी का भी वर्णन है।

किसान जीवन में कर्ज एक बहुत बड़ी त्रासदी है। प्राकृतिक आपदाओं तथा सरकार की गलत नीतियों से कृषक का कर्ज पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है, जो उसकी आत्महत्या का कारण बनता है। कर्ज चुकाने के लिए किसान अपनी जमीन-जायदाद बेचने के लिए मजबूर हो जाता है। उपन्यास का पात्र शिबू के एक बैल मर जाने पर हल में दूसरी तरफ भैंस को बाँधकर जुताई करता है। जमीन के कर्ज से छुटकारा पाने के लिए अपनी पत्नी के गले की हँसुली तक को बेच देता है। अंततः आर्थिक समस्याओं का सामना करते-करते हताश और निराश होकर कुवें में कूद कर आत्महत्या कर लेता है। वहीं नागौर का सुनील भी सबको कर्ज लेने से मना करता था, लेकिन अपने बेटे विजयेन्द्र को अमेरिका भेजने और ट्रैक्टर खरीदने के उद्देश्य से वह भी कर्ज के चक्रव्यूह में फँस जाता है और अंत में आत्महत्या कर लेता है।

वस्तुत: किसान अपने सपनों को साकार करने के लिए कर्ज लेता है परन्तु प्राकृतिक आपदाओं असीमित ब्याज और सरकार की हेयपूर्ण दृष्टि के कारण कर्ज नहीं चुका पाता, वह आजीवन कर्ज में पिसता रहता है। नाबार्ड के आँकड़े बताते है कि देश के किसानों पर 17 लाख करोड़ रुपये कर्ज है। राष्ट्रीय प्रतिवर्ष सर्वेक्षण के 77वें चक्र के आँकड़ों के अनुसार प्रत्येक किसान परिवार के ऊपर औसतन 74100 रुपये का कृषि ऋण है, जो समय के साथ लगातार बढ़ रहा है। कर्ज से दबा किसान परेशान होकर आत्महत्या का रुख अपनाता है। संजीव उपन्यास के समर्पण में लिखते हैं, "सबका पेट भरने और तन ढकने वाले देश के लाखों किसानों और उनके परिवारों को जिनकी 'हत्या' और 'आत्महत्या' को हम रोक नहीं पा रहे।"6

किसान जीवन की एक और सबसे बड़ी समस्या है, फसलों का उचित मूल्य न मिलना। किसान सदैव से न्यूनतम समर्थन मूल्य ना मिलने से परेशान रहा है। सरकारी क्रय केन्द्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार के चलते मजबूरन व्यापारियों को कम दाम पर बेचना पड़ता है, जिससे उनका लागत मूल्य भी वसूल नहीं हो पाता। वर्ष 2020-21 में किसानों ने न्यूनतम समर्थन मूल्य सहित अपनी विभिन्न माँगों को लेकर देशव्यापी आन्दोलन किया था। काफी संघर्षों के बाद सरकार ने किसानों की माँगों को स्वीकार किया। वस्तुत: किसानों के पास आन्दोलन के लिए विश्वसनीय नेताओं का अभाव है। जब किसान बी0टी0 कॉटन के विरुद्ध शरद जोशी के नेतृत्व में आन्दोलन करते हैं तो सरकार के द्वारा किसानों के लिए बीज, खाद, ऋण और मुआवजे हेतु एक टास्क फोर्स का गठन किया जाता है। जिसका अध्यक्ष शरद जोशी को ही बना दिया जाता है और किसानों का आन्दोलन नेतृत्व विहीन हो जाता है।7 ऐसी घटनाएँ यह दर्शाती हैं कि सरकार और पूँजीपतियों के मध्य सांठ-गांठ रहती है। वे कभी नहीं चाहते कि उनके विरुद्ध किसी प्रकार का आन्दोलन हो और होता भी है तो इन शोषणकारी व्यवस्थाओं की कोशिशें रहती है कि आन्दोलन किसी तरह समाप्त हो। इसके लिए सत्ता आन्दोलन के नेता को अलग कर देती है। किसी एक वृत्ति के हाथ आन्दोलन का नेतृत्व केन्द्रित हो तो उस आन्दोलन के भटकाव की संभावना अधिक रहती है। हालांकि महेन्द्र टिकैत के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश का किसान आन्दोलन अपवाद है।

'फाँस' उपन्यास में भी मोहन बाघमारे किसान आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाता है, जो जेल भी जा चुका था। उसके परिवार में पत्नी के अलावा दो बेटे और एक बेटी है जिसके जिम्मेदारी उसके कन्धे पर है। अकेले ही परिवार का भरण-पोषण करते हुए तीन बच्चों को पढ़ाया और बेटी की शादी भी की, परन्तु बेटों के पैसों की माँग को पूरी न कर सका। ऋण लेने की जटिल प्रक्रिया एवं भ्रष्ट अधिकारियों के कारण किसानों को सरलता से ऋण भी मिलना दूभर हो जाता है। मोहन बाघमारे बैंक में जब कर्ज लेने जाता है तो अधिकारी कर्ज न देने के हजारों बहाने बनाता है। सूखे जैसी प्राकृतिक आपदा के कारण उसे बैल का सौदा करना पड़ा और खेत में बैल की जगह स्वयं को जोतना पड़ता है। अतः संजीव मोहन

बाघमारे के माध्यम से वर्तमान किसानों की आर्थिक दुर्दशा और व्यवस्था का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया। डॉ 0 एन0 आर0 शाम लिखते हैं, "यह उपन्यास प्रेमचंद के कथा-साहित्य की प्रगतिशील परम्परा का विकास है। यह सच है प्रेमचंद के गोदान का किसान होरी अभाव में ब्राह्मण को गोदान न कर पाने की असमर्थता बोध से प्राण त्यागता है। वहीं पर संजीव का किसान शेतकारी आन्दोलन में बाघ की तरह दहाड़ने वाला मोहनदास बाघमारे गले में रस्सी बाँध स्वयं गाय बनकर जीता है। दोनों के किसान ब्राह्मणवादी शासन व्यवस्था के प्रतीक हैं।"8

भारत का किसान कृषि-कार्य को अपने मान-सम्मान का जरिया मानता है। उसी से वह अपने परिवार का पेट पालना चाहता है और समाज में सिर उठाकर जीना चाहता है। किन्तु, प्राकृतिक आपदाओं सूखा आदि तथा कर्ज के चक्रव्यूह में फँसकर रह जाता है। अंततः मजबूरीवश खेती छोड़कर बड़े-बड़े नगरों में रोजगार ढूँढ़ने का प्रयास करता है। इन सबके बावजूद वह खेती का मोह त्याग नहीं पाता। शिबू की पुत्री कलावती मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है वह इस कृषि-कार्य से दूर होते किसानों की समस्या पर कहती है, "इस देश के सौ में से चालीस शेतकरी आज ही खेती छोड़ दें अगर उनके पास कोई और चारा हो। 80 लाख ने तो किसानी छोड़ भी दी। एक विद्वान ने कहा है कि शेती कोई धंधा नहीं, बल्कि एक लाइफस्टाइल है-जीने का तरीका, जिसे किसान अन्य किसी धन्धे के चलते नहीं छोड़ सकता। सो तुम बाबा.....तुम लाख कहो कि तुम शेती छोड़ दोगे, नहीं छोड़ सकते। किसानी तुम्हारे खून में है।"9

संजीव ने किसानों की समस्याओं को नजदीक से देखा था। वह स्वयं कृषक परिवार से संबंधित थे। इसलिए किसान-जीवन की हर बारीकी को जानते थे। यह उपन्यास उसी अनुभव और शोध का परिणाम है। प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं, "भारत में अब तक तीन लाख से अधिक संख्या में किसानों ने आत्महत्या की है। यह मानवता के इतिहास की एक भयानक त्रासदी है और अमानवीय समाज-व्यवस्था का भीषण अपराध भी। इस त्रासदी और अपराध के प्रतिरोध की प्रवृत्ति पैदा करने वाला यह उपन्यास 'फाँस' प्रेमचन्द के कथा-साहित्य की प्रगतिशील परम्परा का आज आज की स्थिति में विकास करेगा। संजीव ने इससे पहले भी ऐसी कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास संजीव की मूलगामी और अग्रगामी कथा-दृष्टि का एक प्रमाण है।"10

निष्कर्ष:

संजीव का 'फाँस' उपन्यास किसी एक किसान-परिवार, किसी एक गाँव, किसी एक जिला या किसी एक प्रांत के कृषक समस्याओं की महज एक कथाभर नहीं है; बल्कि यह उन किसानों की कथा है जो कई दशकों से शोषित, वंचित और राजनीतिक विडम्बनाओं के शिकार हैं। वस्तुतः किसानों की समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब जनप्रतिनिधि एवं सरकार राजनीतिक स्वार्थ से ऊपर उठकर किसानों के

उत्थान हेतु कार्य करेंगे। किसानों की समस्याओं को केवल चुनावी मंचों पर मुद्दा न बनाकर उस समस्या को जड़ से खत्म करने की इच्छाशक्ति जाग्रत करेंगे। किसानों को फसलों का उचित मूल्य, कृषि-उपकरण, उर्वरक आदि पर ध्यान दिया जाएगा। भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाकर किसानों को कम ब्याज दर पर सरलता से ऋण उपलब्ध कराया जाये। इन सभी उपायों से किसानों की दशा में सुधार संभव है; अन्यथा किसानों की समस्याएँ यथावत बनी रहेंगी और आत्महत्याओं का आँकड़ा बढ़ता जाएगा। यह उपन्यास किसानों की समस्याओं तथा उनकी दयनीय दशा का भयावह सत्य ही चित्रित नहीं करता अपितु किसानों किसानों को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं फसलों के उत्पादन में वृद्धि के लिए भी उपाय खोजता है। किसानों की समस्या और समाधान दोनों पक्ष इस उपन्यास में मौजूद हैं। वास्तव में, 'फाँस' प्रेमचन्द के 'गोदान' की याद दिला रहा है। अन्तर इतना है कि 'गोदान' का किसान जमींदारों-महाजनों से शोषित था, 'फाँस' का आधुनिक किसान राजनीतिक विडम्बनाओं, भ्रष्ट अधिकारियों तथा कार्पोरेट से पीड़ित है। आधुनिकता की शोर में किसानों का रुदन, आत्महत्या की पीड़ा और उसकी लाचारी सत्ता को दिखाई नहीं देती। संजीव ने उसी पीड़ा, लाचारी को स्वर प्रदान किया है। यदि 'फाँस' उपन्यास को 'किसान-जीवन का श्वेतपत्र' कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ:

- GSPEDIA, 3 फरवरी, 2025
- कृषक जगत, 8 जनवरी 2025
- आउटलुक में संजीव द्वारा दिया गया साक्षात्कार, दिसम्बर-2015
- संजीव, फाँस. (2015), नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ0- 8
- वही, पृ0- 15
- वही, पृ0- 5
- वही, पृ0- 37-38
- शाम, डॉ0 एन0 आर0. (2017). सुसम्भाव्य (हिन्दी त्रैमासिक), वर्ष-2, अंक-7
- संजीव, फाँस. (2015). नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ0- 17-18
- वही, कवर पृष्ठ